E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 88-89
Received: 05-05-2020
Accepted: 07-06-2020

संगीता कुमारी
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग, जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
संगीता कुमारी
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग, जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति एक अध्ययन

संगीता कुमारी

सारांश
समय के साथ भारतीय समाज में कामकाजी महिलाओं की स्थिति में अनेक परिवर्तन हुये जिससे महिलाओं की स्थिति में दिन–प्रतिदिन गिरावट आती गई तथा गरीब महिलाओं पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा, क्योंकि सैकड़ों वर्षों की परतन्त्रता के कारण भारतवर्ष विश्व के सबसे गरीब देशों में से एक है। समाज के निर्माण में महिलाओं की भूमिका उतनी ही प्रमुख है जितनी कि शरीर को जीवित रखने के लिये जल, वायु, और भोजन हैं। कामकाजी स्त्रियां ही संतति की परम्परा में मुख्य भूमिका निभाती हैं फिर भी प्राचीन समाज से लेकर आधुनिक कहे जाने वाले समाज तक स्त्रियां उपेक्षित ही रही हैं। उन्हें कम से कम सुविधाओं, अधिकारों और उन्नति के अवसरों में रखा जाता रहा है, इसी कारण महिलाओं की परिस्थिति अत्यन्त निचले स्तर पर है। भारतीय समाज की परम्परागत व्यवस्था में महिलायें आजीवन पिता, पति और पुत्र के संरक्षण में जीवन–यापन करती रही हैं। भारतीय संविधान में पुरूषों एवं महिलाओं को समाज दर्जा और अधिकार दिये जाने के बावजूद इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि विकास और सामाजिक स्तर की दृष्टि से महिलायें अभी पुरूषों से काफी पीछे हैं। भारतीय समाज में महिला आज भी कमजोर वर्गों में शामिल है। महिला परिवार की आधारशिला है और सामाजिक विकास बहुत कुछ उसी के सद्प्रयासों से सम्भव है। जिस समाज की महिलायें उपेक्षा और तिरस्कार का शिकार होती हैं वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता है।

कुटशब्दः कामकाजी महिलाओं, अध्ययन

भूमिका
आज की सामाजिक घटनाओं में प्रमुख तथ्य नारी की भूमिका में परिवर्तन होना है। आज नारी शिक्षित हो रही है। शिक्षित नारी परिवार के विकास के लिए परिवार की आय में वृद्धि करने के लिए योगदान कर रही है। विवाह केवल दो आत्माओं का आध्यात्मिक बंधन नहीं है। उसे जीवन के यथार्थ को वहन करने के लिए वस्त्र, भोजन, आवास, भौतिक सुविधाएँ सभी की आवश्यकता है। बच्चों की शिक्षा–दीक्षा पर होने वाले व्यय से परिवार की आय में कमी आ रही है। पति की सीमित आय आज के सामाजिक परिवेश में जीवन की सुविधा जुटाने में असमर्थ है। शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक दवाब के कारण नारी को कामकाजी होना पड़ रहा है। आज पुरानी पीढ़ी के लोग भी यह इच्छा रखते हैं कि उनकी पुत्रवधू भी परिवार की आय में वृद्धि करे तथा वह सभ्य संस्कारित व शिक्षित हो। शिक्षा के प्रसार तथा आर्थिक दवाब के कारण महिला रोजगार की तरफ बढ़ी है। आज उनकी संख्या इतनी हो गई है कि सेवारत महिलाओं का स्वयं एक वर्ग बन गया है।
महिलाओं के कार्यकारी होने से उन्हें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें दोहरी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है जिससे वे अपने बालकों की देखभाल करने का समय नहीं निकाल पाती। कार्यकारी महिलाएं चाहते हुए भी अपने बच्चों की उपेक्षा करने के लिए विवश हैं। उनके बच्चों में समायोजनात्मक दोष उत्पन्न हो जाते हैं। यह देखा गया है कि कार्यकारी महिलाओं के बालकों में माता–पिता के प्रति आस्था तथा निष्ठा कम पाई जाती है। उनके बच्चे विद्यालयों में भी कभी–कभी समस्यात्मक बालक बन जाते हैं।
समाज में अन्तःक्रिया करने से पूर्व व्यक्ति परिवार में ही पूर्व–अनुभव प्राप्त करता है। परिवार से प्रत्येक क्षण के अनुभव बालक के जीवन में यन्त्र की भांति कार्य करते है। शिक्षालय की अपेक्षा बालक अपना अधिक समय समाज परिवार में व्यतीत करता है। परिवार में भी अन्य सदस्यों की अपेक्षा प्रथमतः बालक माँ से शिक्षा प्राप्त करता है। बालक को सही शिक्षा एवं संस्कार देने का पहला दायित्व माँ का होता है। हमारे पौराणिक ग्रन्थों में इस बात का उल्लेख स्पष्ट मिल जाएगा कि वह मनुष्य की जननी एवं ब्रह्माण्ड की रचयिता है। उसके बिना मानव समाज का विचार भी असंभव है। वह जीवन चक्र की ऐसी धुरी है कि जिसके बिना मानव जीवन की प्रगति सम्भव नहीं है द्य माँ का स्थान सर्वोच्च है सही मायने में बालक की भविष्य निर्मात्री माँ ही है। लेकिन हमारी पारिवारिक स्थिति कैसी है। परिवार का वातावरण कैसा है? परिवार के महत्वपूर्ण चर (महिला) की क्या स्थिति है? उसका परिवार में क्या योगदान है? परिवार से सम्बन्धित ऐसे ही अनेक प्रश्न विचारणीय हैं।

आज औद्योगीकीकरण और वैज्ञानिक खोजों के पश्चात् ऐसा परिवर्तन आया कि संयुक्त परिवार की अवस्था लगभग समाप्त सी है।

आज अधिकांश महिलाएं घर की चारदीवारी से निकलकर कार्यक्षेत्र के मैदान में आगे आ रही हैं, कार्यकारी महिलाओं के कार्यक्षेत्र में प्रवेश से उनके घरेलू वातावरण में अन्तर आया है, क्योंकि घर के वातावरण को श्रेष्ठ बनाये रखने में सर्वाधिक श्रेय माँ का होता है। बालक के सर्वांगीण विकास में माँ की महत्वपर्ण भमिका होती है। कहा भी गया है – बालक की प्रथम शिक्षिका माता है। कार्यकारी महिलाओं के समक्ष अपने बच्चों का सही लालन–पालन एवं सन्तुलित सर्वांगीण विकास की समस्या खड़ी हो जाती है। वर्तमान युग में मानव यन्त्रवत् हो गया है। भावात्मक एवं संवेगात्मक वातावरण के स्थान पर परिवार से अलगाव, शून्यता एवं एकाकीपन का वातावरण उत्पन्न हो रहा है। इस तरह परिवार के बच्चों में कुण्ठा, तनाव, कुसमायोजन की प्रवृतियां पनप रही है। माँ की ममता के अभाव में बालक का कुण्ठित होना स्वाभाविक ही है। सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है– बालक की संवेगात्मक स्थिति पर। बालक में संवेगात्मक रूप से अस्थिरता उत्पन्न होने लगती है जबकि बालक व अभिभावक का सम्बन्ध भी मात्र औपचारिक बनकर रह गया है। पारिवारिक वातावरण सामंजस्यपूर्ण नहीं रह पाता, ऐसी स्थिति में बालक के समायोजन व संवेगों के विकास में बाधा पड़ती है। इन विपरीत परिस्थितियों में गृह निर्मात्री माँ अपने दोनों उत्तरदायित्वों (नौकरी व बालक का लालन–पालन) को पूर्ण करने में अपनी सूझबूझ एवं परिवार के अन्य सदस्यों की सहायता लेनी आवश्यक होती है, जिससे बालक का सन्तुलित सर्वांगीण विकास हो सके।

पारिवारिक सम्बन्धों में पति–पत्नी के साथ–साथ बच्चों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। परिवार में बच्चों और माता–पिता के बीच सम्बन्धों को मुख्यतः तीन महत्वपूर्ण रूप में देखा जाता है। जिनमें प्रथम प्रकार है स्वीकारोक्ति, इसमें माता–पिता अपने बच्चों की अधिकतम बातों को स्वीकार कर लेते हैं। बच्चा जो कुछ भी कहता है माता–पिता उसकी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। ऐसे अभिभावक बच्चों की हर प्रकार की समस्याओं को दूर करने का भरसक प्रयास करते हैं। दूसरा प्रकार है–ध्यान देने वाले, इसमें बच्चों के ऊपर नियंत्रण रखा जाता है। माता–पिता बच्चों की आवश्यक मांगों को ही पूरा करते हैं और अनावश्यक बातों के प्रति जागरूक रहते हैं। वे बच्चों को अच्छी–बुरी बातों के प्रति सचेत भी करते हैं। तीसरा प्रकार– अस्वीकारोक्ति, इसमें ऐसे माता–पिता आते हैं जो अपने बच्चों पर ध्यान नहीं देते हैं। उनकी जायज मांगों को भी अस्वीकार कर देते हैं। उनकी इच्छाओं का दमन करते हैं।

निष्कर्ष

समस्या के सम्बन्ध में अध्ययन करने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान समय में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत तेजी से सम्पन्न हो रही है। इस प्रक्रिया से समाज में सभी दिशाओं में परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों से समाज की विभिन्न इकाईयों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़े हैं। समाज की महत्वपूर्ण एवं आधारभूत इकाई परिवार है। परिवार की धुरी नारी है। युग चाहे जो भी रहा हो समाज का विकास नारी के विकास पर ही आधारित रहा है।

संदर्भ

1. नन्दा, बी0आर0 (1976) –इण्डियन वीमेन, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0 दिल्ली।
2. परमार, दुर्गा (1982) –श्रमजीवी महिलाएं और समकालीन पारिवारिक संगठन, साहित्य भवन आगरा।
3. रानी, कला (1976) –रोल कन्फिलक्ट इन वर्किंग वीमेन, चेतना पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. सिंह के0 पी0 – 'कैरियर ऑफ फैमिली वीमेन टू वर्क्सः ए स्टडी इन रोल कन्फिलक्ट'' इण्डियन जर्नल आफ सोशलवर्क, मुम्बई।
5. सेकर एण्ड स्मिथ (1962) –मैरिड वीमेन वर्कर्स, जार्ज एलेन एण्ड अनविन, लंदन।
6. सेनगुप्ता, पी0 (1960) –वीमेन वर्कर्स आफ इण्डिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई।